मुकेश कुमार मिश्र

जन्मतिथि-20/08/1987

शिक्षा- भौतिकी में परास्नातक।

प्रकाशित कृतियाँ- 1-थाना (मुक्तक संग्रह-2019), 2- फटी हुई बनियान(नवगीत संग्रह-2022), 3-काव्या (साझा संकलन), 4-विविध प्रसंग (साझा संकलन), 5-शृंगिनी (साझा संकलन)।

व्यवसाय- उत्तर प्रदेश सरकार के गृह विभाग के अधीन वर्ष 2011 से कार्यरत।

सबसे बड़ा सवाल

इतने दिन में ही दुनिया का,
देख चुका हूँ रूप।

सुखियों को सुख, दुखियों को दुख,
क्यों देता संसार।
समय मिले यदि, तो कर लेना,
इसपर तनिक विचार।
गर्मी में ही अधिक देर तक,
क्यों टिकती है धूप।

चोट फावड़ों की सहता है,
होता नहीं अधीर।
तब पीने को दे पाता है,
जग को शीतल नीर।
सबके बस की बात नहीं है,
बन पाना अब कूप।

ऐसे नहीं इकट्ठा करता,
है हर कोई माल।
इसके पीछे है जीवन का,
सबसे बड़ा सवाल।
भारी चीजों को ही अपने,
पास रोकता सूप।

पहले प्रमुख ख़बर

जीवन का वाचन करता है,
समाचार वाचक।

इधर-उधर की बात न होती,
पहले प्रमुख ख़बर।
ज्ञात उसी से हो जाता है,
क्या चलना दिनभर।
इसके लिए ज़रूरी होती,
दृष्टि बड़ी व्यापक।

घटनाओं का वह करता है,
फिर विस्तृत वर्णन।
अच्छी बुरी सभी ख़बरों का,
एक तरह वाचन।
मिल जाते हैं उसको, सुख-दुख,
दोनों के ग्राहक।

ठीक इसी के बाद, सामने
आता अर्थ जगत।
कार, नौकरी, सोना, चाँदी,
ऐ0सी0, बाइक, छत।
धन के आगे इस हालत में,
लगता सब भ्रामक।

और अन्त में बाँची जातीं,
खेलों की बातें।
कटे दिवस कितने खेलों में,
कितनी ही रातें।
खेल खेलने वाला कोई,
कोई है दर्शक।

ISSN:2583-8849